International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 74-77

स्त्री की कविताओं में संवेदनाओं की नवीन अभिव्यंजनाऐं

करूणा सक्सेना

शोधार्थी, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

कविता के संसार मे स्त्रियों का लेखन सदैव रोचकता एवं रहस्य लिए रहा हैं। यह बात आदिकाल से होती हुई भक्तिकाल को जोडती हुई समकालीन कविता एवं वर्तमान में भी स्वयं सिद्धा है। कवयित्रियों ने अपने मन के रेशे–रेशे खोलकर कविताओं के रूपहले महल खड़े कर दिये हैं। शायद ही स्त्री के मन का कोई भाग–कण उसकी लेखनी से शेष रह पाया हो। उसने जो देखा, जो भोगा सब कुछ लिखा। उसके आस–पास की दैनिक घटनाओं से लेकर मन के अथाह सागर तक की चिर कहानियाँ स्त्री की कविता में उसकी सहेली बनी, उसकी हमराज बनी। कहीं उसकी कविता में निश्चल प्रेम दिखा, तो कंही निष्ठुर रोष, कहीं मातृत्व की हरी हिलोरें दिखी तो कहीं उसके जीवन की स्याह सच्चाई। कवयित्रियों ने भी ठान लिया कि कंही कुछ छूटने न पाऐ, उनकी कल्पनाशीलता के पंख ऊँची से ऊँची उडान भर रहे है तो यर्थाथ के पैर जमीन की निचली सतह तक चिपके हुऐ है। स्त्री की कविता ने स्त्री के जीवन के विभिन्न रहस्यों को रहस्यात्मक रखते हुए उजागर किया है। उसके मन के अनुछुऐ भाग जिसे एक स्त्री बहुताय तो किसी को स्पर्श करने ही नही देती कविताओं में कल कल करती नदी की मानिन्द ताबड़तोड़ बहते हैं। भक्तिकाल में मीरा ने अपने दुख, प्रेम, भक्ति और कौतुहल को काव्य में मूर्त रूप प्रदान किया। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पद ही उनके जीवन का मार्ग प्रशस्त करते है। ठीक उसी प्रकार छायावाद में महादेवी वर्मा ने पीड़ा की ऐसी सृष्टि रची जिसने स्त्री मन की व्याकुलता, अवसाद और वेदना को संसार सम्मुख ला खडा कर दिया। महादेवी वर्मा की व्याकुलता स्पष्ट करती उनकी पंक्तियाँ ''जब असीम से हो जाऐगा/मेरी लघु सीमा का मेल/ देखोगे तुम देव! अमरता/खेलेगी मिटने का खेल।'' आज अपनी संवेदनात्मक अनुभूतियों को स्पष्ट करने के लिए स्त्री ने नवीन रूप अखत्यिार कर लिया है। इस नवीन रूप से तात्पर्य है, उन नवीन अभिव्यंजनाओं से जो वर्तमान कवियत्रियाँ, कविताओं में अपने भाव व्यक्त करने के तरीकों में प्रयोग करती है। वे जीवन समस्त तथ्यों, तकनीकों एवं वस्तुओं पर अपनी पैनी नजर रखती है। कभी–कभी सामान्य से दिखने वाली घरेलू वस्तुऐं जिन पर सामान्यतः ध्यान नही जाता है, जीवन की नियमित प्रक्रियावृद्ध घटनाऐं जिन्हें रोजमर्रा मान जिया जाता है ये कवयित्रियाँ उन समस्त साधारण बातों को लेकर असाधारण काव्य रचना करती हैं। अनामिका की कविताऐं नवीन अभिव्यजनाओं का विस्मयी घरौंदा है वे अपनी काव्य रचनाओं को अपनी अभिव्यंजनाओं से ही आलौकिक रूप प्रदान करती हैं। साथ ही वर्तमान में महिलाओं की सामाजिक स्थिति के सारे ताने–बाने बुनती चलती है। उनकी एक कविता ''बेजगह'' में वे शिक्षा व्यवस्था के आरभिंक पाठों पर तंज कसती है। यथाः–

''अपनी पहली कक्षा में ही!
याद था हमें एक–एक अक्षर
आरंभिक पाठों का
राम पाठशाला जा!
राधा, खाना पका!
राम आ बताशा खा।
राधा, झाड़ू लगा!
भैया अब सोएगा
जाकर बिस्तर बिछा!
अहा नया घर है!
राम,देख, यह तेरा कमरा है!'
'और मेरा?'
'ओ पगली,
लड़किया हवा, धूप, मिट्टी होती है
उनका कोई घर नही होता।''

यहाँ हमारी शिक्षा व्यवस्था के ''आरम्भिक पाठ'' जो कि हमारे बालपन के नियमित सखा होते है और एक बार उम्र बढ़ जाने के बाद हमारा उन पाठों पर निसंदेह ध्यान ही नही जाता। परन्तु अनामिका ने पाठय–पुस्तकों मे से खींच कर उन पाठों को एक बार पुनः सबके सामने रख दिया कि 'अब पढ़ो और सोचो कि ये पाठ आखिर क्या 'पाठ' पढा रहे है। हमें और हमारे समाज को? अनामिका की कविताऐं स्त्री विमर्श को प्रस्तुत करती है। स्त्री की दशा और दिशा को बदलने के लिए वे विचार को मुख्य हथियार मानती है– ''ऐसी भयानक इस दुनिया में कहीं कोई परिवर्तन लाएगा तो विचार ही, विचार–विमर्श, स्त्री विर्मश जो अस्मिता की गुत्थियों को भाषा में परावर्तित देखता है और चाहता है प्रक्षालन–धर्म–ग्रन्थों का कानून का, दृष्टि का, आचार का.....।।'' विचार और भाव पारस्परिक होते है। विचारों का भावात्मक सहंवन एवं भावों का विचारात्मक मूल्यांकन महिलाओं की शक्ति होती है यही कारण है कि स्त्री की कविता में उसके समस्त भाव विचारात्मक प्रतिक्रियाओं को जन्म देते है एवं उसके विचार मानव मन में भावों का निस्पादन करते है। कवयित्रियाँ अपने मूल भाव के साथ, अपने विन्तन के साथ, अपने विचारों को नवीन अभिव्यजंनाओं के साथ प्रस्तुत करती चलती है। वर्तमान में स्त्री लेखन के अन्तर्गत प्रायः पाया जाता है कि वर्तमान महिला अत्यन्त विवकेशील है। उसके निर्णय चाहे वे जीवन के किसी भी प्रसंग से संबंधित हो यथा परिवार, समाज, शिक्षा, प्रेम, विवाह और बच्चे। उसकी कलम सभी पर विवके पूर्ण चलती है। कवयित्रियों को ज्ञात है कि उनके लिए क्या ज्वलंत है एवं क्या निष्क्रिय। कविता में संवेदनाओं का कलात्मक संयोजन एवं संघर्षात्मक व बेबाक अभिव्यक्ति अभिव्यजंनाऐ वर्तमान महिला की विचारशीलता की परिचायक है। नितान्त घरेलू महिलाऐं भी गृहस्थी, बच्चों और संघर्ष के मध्य कैसा विवेक बैठाती है। अनामिका की एक मार्मिक कविता ''सूली ऊपर सेज पिया की'' की पंक्तियों से समझा जा सकता है–

''साड़ी का फंदा बनाकर लटक जाना पंखे से!
इतना आसान नही मरना भी!
पंखे पर धूल जमीन है जैसे सदियों की!
फंदा लगा लूं कि पहले पोंछ देने की चिंता

एक भोंडा चुटकुला है!''

ऐसा मर्म ऐसी वेदना वर्तमान स्त्री की लेखनी में ही संभव है जहाँ वह जीवन जाल में निरन्तर झूल रही है। उसे ज्ञान है इस बात का कि संघर्ष कितना भी चरम पर क्यों न हो लेकिन अपने गृहस्थ विवके को आखिर कैसे दाह कर दिया जाऐ। रूदन कितना भी क्रूर क्यों न हो परन्तु अपने बच्चों के भविष्य को किस प्रकार सुरक्षित किया जाए। मातृत्व स्त्री के लिए उपहार स्वरूपा होता है तो वही उसका पत्नि धर्म उसके जीवन का सम्मान होता है, परन्तु हर रूप में अपने अस्तित्व को एवं अस्मिता को बनाऐ रखना स्त्री के लिए सदैव चुनौती पूर्ण रहता है। कवयित्रियाँ इस बात को पुरजोर बल देती है कि स्त्री होना मात्र देह होना नही है, स्त्री होना एक जीते जागते अस्तित्व का होना है। स्त्री होना एक सम्पूर्ण सृष्टि होना है। उसमें प्रेम, स्नेह, मातृत्व के जितने कोमल भाव होते है उतना ही क्रोध, विद्रोह, संघर्ष और नैतिकता का भाव भी प्रबल होता है। स्त्री का प्रत्येक उन्नत कदम एक उन्नत समाज का प्रतीक होता है अतः देह होना स्त्री के लिए समस्त संसार हो जाना होता है। कात्यायनी की पंक्तियाँ देह होने और न होने के अन्तर को कितनी स्पष्टता से उजागर करती है–

''देह नही होती है
एक दिन स्त्री
और
उलट–पुलट जाती है
सारी दुनिया
अचानक!''

कात्यायनी की कविताओं में स्त्री अपने जीवन के सभी दुखडों पर रूदन के बाद पुनः खडी होती है नये संघर्ष के लिए एकदम तरोताजा नजरिये के साथ। वह भूल जाती है कि अतीत के दुख एवं अवसाद क्या है क्योंकि वह वर्तमान की आवाज को पहचानती है, वह जानती है उसे भविष्य पुकार है। अतः आवश्यक है पुर्नजीवन! कात्यायनी की कविता 'बारिश के बाद' की पंक्तियों में स्पष्ट है कि स्त्री संघर्ष के बाद प्रेम के स्पर्श को भी नही नकारती एवं अपने अस्तित्व में समस्त जगत को समावेशित करती है–

''दिपदिपाती है
पनीली ललछौंह आँखे
जी भर रो लेने के बाद
प्यार से भरकर!
धुले पुंछे खडे है पेड
तरोताजा, साफ–दाफ,
मुस्कराते हिलते हैं
नन्हें पौधे जंगली फूलों के,
बारिश के बाद।''

स्त्री जितनी आग है उतनी पानी भी है। यही कारण कि कविताओं में उसके विभिन्न रूपों का आलोक दृष्टिगत होता है। वर्तमान में जबकि शिक्षा ने स्त्रियों को अग्रिम पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया है आज के विकसित समाज का ऐसा कोई दरवाजा शेष नही रहा है जिसपर स्त्री ने अपनी दस्तक न दी हो। तब भी समाज में ऐसा स्त्री वर्ग है जो कहीं न कहीं अपनी अस्मिता के लिए संघर्षपरत है। कभी यह बाते उजाले में दृष्टिगत होती है तो कभी चार दीवारी के भीतर घोंट दी जाती है परन्तु फिर भी स्त्री हार नही मानती। वह लड़ती है विद्रोह करती है, अपने आपको बचाऐ एवं बनाये रखने के लिए। कविताओं में यही संघर्ष नयी व्यंजनाओं को जन्म देता है। स्त्री की यही नवीन दृष्टि जब कागज–कलम के माध्यम से समाज के सामने आती है तब असाह्य वेदना के स्वर सुनाई देते है। इसी प्रकार वर्तिका नन्दा की कविताओं मे सुलभता से समझा एवं पढ़ा जा सकता है कि किस प्रकार महिलाऐं घरेलू हिसां का शिकार होती है और बात यही तक आकर नही थमती बल्कि दुनिया के हर हिस्से में स्त्री अपराधों का आसान शिकार होती है कभी तथ्य उजागर हो पाते है तो कभी किचिंत मात्र भी नही। ऐसे में महिलाऐं असुरक्षित तो है ही साथ ही एक ऐसा स्त्री वर्ग भी है जो आवाज भी नही उठा पाता चाहे यह उनकी आर्थिक अक्षमतायें हो या शैक्षिक अक्षमतायें, परन्तु स्त्री बराबर एक संघर्षपूर्ण दुनिया में जी रही है। वर्तिका नन्दा की कविता 'मरजानी' में एक ऐसी स्त्री का वर्णन है जो एक घर की सबसे महत्वपूर्ण सदस्या होने के बावजूद अस्तित्वहीन है। यहां तक की उसकी मृत्यु जो कि एक कामकाजी सोमवार को हो गई है अतः पूरे परिवार को खल रहा है ऐसा सोमवार, जिसे मरजानी ने मरकर बेकार करवा दिया है–

''असल नाम
शादी के कार्ड पर लिखा था
कागजी जरूरतों के लिए
कभी कभार काम आया
फिर पड़ गया पीला''

कुछ आगे की पंक्तियाँ – ''कुनबुना रहे है पति बेवजह छूट गया दफ्तर सोमवार के दिन ही बच्चों की छटपटाहट–काश मरती कल शाम ही/ नही करनी पड़ती तैयारी इम्तहान की।'' यह कविता स्त्री की एक धीमी मृत्यु की कविता है, यह एक स्त्री का मौन शोषण है। वह एक बार में ही नही मरती बल्कि थोड़ा–थोड़ा रोज मरती है। आमतौर पर यह एक दैनिक घरेलू हिसां है जो क्रूर समाज को सामान्य सी घटना दिखती है। परन्तु चार दीवारी में स्त्री की प्रत्येक सांस छटपटाहट भरी होती है। कभी कभी यही छटपटाहट इतनी उग्र होती है कि स्त्री आग उगलती हुई सात समन्दर भी पार कर लेती है, उसकी आँखों में चमकता सूरज उसे भविष्य का मार्ग दिखाता है और वह निरन्तर कदम पर कदम बढाती चली जाती है। वर्तिका नन्दा की कविता 'खुशामदीद'' में यही नवीन अभिव्यंजना दृष्टि गोचर हो रही है–

''बेटियाँ नापती है
पथरीली पगडडियाँ
उन्हें भटकने कहाँ देगी
पाँव में किसी ब्रांड का जूता होगा
तभी तो मचाएगी हंगामा बेवजह
बिना जूतों के चलने वाली ये लडकियाँ
अपने फटे दुपटटे कब सी लेती है
और कैसे पैदा कर लेती है लपलपाती भूख से ऊर्जा
कब पी लेती है
दर्द का जहर
खबर नही होती
ये लडकियाँ बढ़ी आगे चली जाती है।''

कविताओं की यही अभिव्यंजना स्त्री की नई सोच को दर्शाती है कि वह किस प्रकार जीवन को सम्पूर्ण करने के लिए निरन्तर दौड़ रही है। सामान्य से सामान्य परिस्थितियों में असामान्य एवं ऊँचे लक्ष्य साधती है। वह जानती है यदि पीछे मुड़ी तो हार जाऐगी अतः उसकी गति ही उसकी सम्पत्ति है। कई कवयित्रियों ने बडी बेबाकी से अपनी कविताओं में यह सिद्ध किया है कि किस प्रकार आज स्त्री अपने सतही गुणों के ऊँची उड़ान उड़ रही है। किरण अग्रवाल

की कविता में स्त्री को इतिहास रचयिता बतलाया गया है कि वह किस प्रकार सभ्यता व संस्कृति की श्रेष्ठ वाहक है ''औरते कविताएँ नही पढ़ती/ लेकिन लिखती है/और गाड़ देती है अंधेरे तहखानों में/भूल जाने के लिए/जहाँ से युगों के बाद/कोई पुरातत्ववेत्ता/खोच कर निकालता है एक पूरी सभ्यता/औरतें इतिहास रचती है/और खाली छोड़ देती है अपने नाम की जगह।'' किरण अग्रवाल की यह कविता एक नये तेवर की कविता है। जहाँ स्त्री की अपनी जमीन है जिसके अनुभव उसकी लेखनी ही साझा कर सकती है। वह अपनी गृहस्थी के साथ साथ अपने सामाजिक जीवन के प्रति भी सजग है और अपनी आवाज बुलन्द कर रही है। उसकी गति और सक्रियता ही उसकी पहचान है, उसका अस्तित्व है। स्त्री काव्य की यही सक्रीयता समाज व पाठक का ध्यान आकर्षित करती है। कवयित्रियों की अपनी ही एक शैली है और अपनी ही एक अनोखी भाषा। जिसका साकार रूप निसंदेह ध्यानाकर्षण का विषय बनता है। कविताओं में मुखर स्वर स्त्री व्यथा से लेकर स्त्री विमर्श तक आते है जहाँ निष्कर्ष के रूप में स्त्री–प्रगति के ग्राफ को देखा जा सकता है। वर्तमान कवयित्रियों की रचनाओं में इस मुखरता को विशेष रूप से देखा जा सकता है। बाबुषा कोहली आज का नया नाम है उनकी कविताओं में नवीन अभिव्यजंनाओं का एक पूरा जीता जागता संसार है। बाबुषा की कविताऐं स्त्री कविता को नये आयाम देती है और एक ऐसा आकाश खोलती है, जहां स्त्री ने पुरूष को सहचर व समानार्थी मानते हुऐ अपने संसार को बसाया है। बाबुषा की कविताओं में नित नूतन प्रतीकों एवं भावों का शीतल अहसास उत्पन्न होता है। बाबुषा की कविता 'एक टुकडा प्रेम' में प्रेम की अभिव्यंजना देखते ही बनती है–

''मैने तन पर केवल प्रेम पहना है
खुरदुरा फिर भी महीन
यह एक टुकड़ा प्रेम
कभी तो फैलकर आकाश ढँक लेता है
कि सरे–बाजार निर्वस्त्र कर देता है।''

प्रेम की ऐसी व्यन्जना अपने आप में ही निराली है जो एक स्त्री के मन को खोल कर रख देती है और अहसास कराती है उस स्नेह का जिसके भोग से ही सारी सृष्टि थमी हुई है। एक स्त्री का मन गूढ़ रहस्यों से लबरेज होता है एवं जो सौभाग्य शाली उसका भागीदार बनता है। वह उस पाश में सदैव के लिए मग्न हो जाता है और जो स्त्री मन की अवहेलना कर जाता है वह भोग एवं भाग्य के अन्तर को कभी नही समझ पाता। बाबुषा की कविता 'हद पार' में इस भाव की आलौकिक व्यंजना देखने को मिलती है–

''औरत के कई मन
कई मनों के कई राजा
औरत एक राज्य जो अपने भूगोल के भीतर नही रहता
राजा भूखंडो पर राज करते रह जाते है।''

इस प्रकार बाबुषा कोहली ने औरत के मन की गहराई दर्शाने के लिए सशक्त लेखनी चलाई है। निश्चित ही वर्तमान में महिलाऐ अपने वजूद का परिचय दे रही है और यह कविताओं में स्पष्ट रूप से झलक रहा है। स्त्री का शताब्दियों का संघर्ष अभी भी जारी है परन्तु फिर भी कई मायनों में स्त्री ने अपना शीश उठाया है और अपनी बुलन्द आवाज से सूक्ष्म से लेकर स्थूल जगत को सम्बोधित किया है। यही कारण है कि आज की स्त्री की काव्य रचना नये का बोध कराती है। इसी क्रम में सरस दरबारी की प्रथम काव्य कृति 'मेरे हिस्से की धूप' में नवाकुंर रचनाऐं स्त्री गाथा को नयी दिशा प्रदान करती है। इनकी कविताओं में एक स्त्री के दैनिक अनुभव एवं उसकी असीम जिज्ञासायें ही उसकी चिर सखी है। जो नित नये आकाश की ओर उसे खींच रही है। सरस दरबारी ने भी बहुत संवेदनशीलता के सथ स्त्री के संसार का खाका खींचा है जहाँ वह स्वयं तो सशक्त है ही साथ ही साथ इस भौतिक जगत को भी एक नयी दिशा प्रदान करती है जैसा की सरस की कृति का शीर्षक ही स्त्री के हिस्से के पक्ष को रखता है। वर्तमान की कवयित्रियों की यह खास बात है कि वे अपने हिस्से अर्थात अपने पक्ष की बात को बेबाकी से कहना सीख गयी है। स्त्री जान गई है कि यदि आज वह अपने हिस्से की बात नही करेगी तो निसंदेह उसका हिस्सा उससे छीन लिया जाऐगा अतः आवश्यक है अपनी आवाज को मुखर करना और अपने वजूद को कायम रखना। उनकी एक कविता में जिसमें कवयित्री अपने अस्तित्व की खोज में रत है और प्रायः वही चीज खोजी जाती है जो अस्तित्व में प्राकट्य होती है, कविता 'खोज' में स्पष्ट की गई है–

''शाख के उस एक पत्ते पर शेष बचा वह जलबिंदु
अब भी झूल रहा है, गिरकर बिखरने का डर उसे नही,
उसे बचाओं..... अंतर की चीख सुन,
एक उंगली का सहारा दे, प्रकाश, स्त्रोत के समक्ष
नेत्रों के धरातल पर रख देती है
देखती हूँ, स्त्रोत से फूटी किरणें–
बिंदु से उनका टकराव
फिर चारों ओर छितरे, असंख्य प्रकाश कण।
बिंदु एकाग्र है।''

स्त्री का अस्तित्व भी एकाग्र होता है अपने लक्ष्यों के प्रति। ये लक्ष्य उसके जीवन के सभी पक्षो से संबंधित होते है। वह पुत्री होकर भी एकचित्त है अपने दुर्गम लक्ष्य की ओर, तो पत्नि होकर भी समर्पित है अपने गृहस्थ जीवन को और माँ होते हुए तो वह साक्षात देवी है, जो एकाग्र है अपने अंकुरो के निर्बाध भविष्य के लिए अपने पूर्ण साहस और निडरता के साथ।

अतः यह स्पष्ट है कि वर्तमान में कवयित्रियाँ अपनी काव्य–रचनाओं के माध्यम से नये का विस्तार कर रही है। नये प्रतीक, नये बिम्ब, नयी संवेदनाएँ, नयी प्रतीति एवं उनकी नयी व्याख्या स्त्री की कविताओं में संवेदनाओं की नवीन अभिव्यंजनाऐं गढ़ रही है। ये नया पन की एक नये आसमान की रचना में नित मग्न है, जिस पर स्त्री मन ऊँची उडान भर रहा है। आज की स्त्री भाग्यवादी नही है, वह भाग्य की कृपा एवं उसके प्रकोपों पर विश्वास नही करती अपितु स्वयं में विश्वास रखती है। उसे अपने ही अस्तित्व में भूत, वर्तमान एवं भविष्य की समस्त सम्भावनाऐं दिखलाई पड़ती है। अतः वह उसी अस्तित्व को एक सूक्ष्म कारीगरी दृष्टि से रचनात्मक रूप प्रदान कर रही है, ताकि विश्व–समाज में स्त्री को सतही गुणों के साथ स्थापित कर सके। साथ ही स्थापित कर सके उन समस्त भावों को जिनका दमन अब उसके लिए संभव नही रहा। पूर्ण आशा है कि आने वाले भविष्य में स्त्री कविता एक नूतन आयाम धारण करेगी, जो आज से भी अधिक मुखर एवं सुस्पष्ट होगी ताकि देश–दुनिया की प्रत्येक स्त्री की आवाज इस समाज को स्पष्ट रूप से सुनाई दे सके।

संदर्भ सूची

1. महादेवी वर्माः यामा/लोक भारती प्रकाशन/ द्वितीय संस्करणः2012
2. अनामिका : कवि ने कहा (चुनी हुई कविताऐं)/किताबघर प्रकाशन/संस्करणः2011

3. कात्यायनीः कवि ने कहा (चुनी हुई कविताऐं)/किताबघर प्रकाशर/प्रथम संस्करणः 2012।
4. वर्तिका नन्दाः थी हूँ रहूँगीं/राजकमल प्रकाशन/प्रथम संस्करणः2012।
5. बाबुषा कोहलीः प्रेम गिलहरी दिल अखरोट/भारतीय ज्ञानपीठ/प्रथम संस्करणः 2015।
6. सरस दरबारी : मेरे हिस्से की धूप/ अजुंमन प्रकाशन/ प्रथम संस्करणः 2016।
7. ए. अरविन्दाक्षन : समकालीन हिन्दी कविता/राधाकृष्ण प्रकाशन/ प्रथम संस्करणः 1998।
http://kavitakosh.org. किरण अग्रवाल।